# एक गऊ मेरे भीतर है जिसे कटने का डर है : गगन गिल

ज्ञानेंद्र कुमार शुक्ल ● जागरण

ग्रेटर नोएडा : वर्ष 2024 का साहित्य अकादमी पुरस्कार हिंदी की नामचीन साहित्यकार गगन गिल को दिए जाने की घोषणा हुई है। इसके बाद ग्रेटर नोएडा में सेक्टर पाई स्थित एलडिगो ग्रीन मीडोस के फ्लैट जी-16 में वह स्वभाव के अनुसार बेहद शांत, आंखों में खुशी के आंसू लिए मिलीं। दरवाजा खोला और औपचारिक परिचय के बाद जैसे ही कुछ पूछना चाहा तो बोलीं क्या बोलूं समझ में नहीं आ रहा, फोन पर फोन बधाई के लिए आ रहे हैं। ऐसे में क्या बोलूं और कैसे बोलूं। बस ईश्वर से प्रार्थना कर मां व डा. निर्मला वर्मा पर कविताएं लिखी हैं जो कि मेरे जीवन की महत्वपूर्ण दो घटनाएं हैं। मेरी कृति 'मैं जब तक आई बाहर' वर्ष 2017 में प्रकाशित हुई थी। जिसमें चार खंड हैं और हर खंड में सात कविताएं हैं। प्रस्तुत है उनसे बातचीत के प्रमुख अंश...

**अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में कुछ बताइए, मैं जब तक आई बाहर तक का सफर कैसे तय किया?**

-अपने जीवन की दो घटनाओं जिसमें डा. निर्मला वर्मा व मां डा. महेंद्र कौर गिल को लेकर ईश्वर से इस कृति में प्रार्थना की है। यह चार खंडों में है। हर खंड में सात कविताएं लिखी हैं। मां जो कि दिल्ली में प्रधानाचार्य व पंजाबी की सुप्रसिद्ध लेखिका रही हैं। ऐसे में साहित्य का बोध हुआ और उस तरफ खुद को 20 वर्ष की उम्र में ही ढाल लिया। उसका परिणाम यह हुआ कि वर्ष 1983 में उनकी कविताओं की सीरीज और दूसरा कविता संग्रह एक दिन लौटेगी लड़की नाम से वर्ष 1989 में प्रकाशित हुआ।

**नए लेखक खासकर महिलाएं इंटरनेट मीडिया में लिख रहे हैं। सामाजिक, अपने ऊपर हो रहे उत्पीड़न को लेकर लिख रही हैं किस तरह इस परिवर्तन को देखती हैं ?**

-परिवर्तन है लेकिन उनको चाहिए कि जीवन को अपने ऊपर घटने दें, घबराएं नहीं। जो अनभव उन्होंने अपने जीवन में लिए हैं, उनको अपनी भाषा में कैसे लाया जाए, इसकी प्रतीक्षा जरूर करें। किसी जल्दबाजी की जरूरत नहीं है। निश्चित तौर पर महिलाएं सभी वर्जनाओं को तोड़कर लिखने का प्रयास कर रही हैं और सफल भी हैं। यह अच्छा परिवर्तन है।

साहित्य अकादमी पुरस्कार की घोषणा के बाद भावुक मुद्रा में साहित्यकार गगन गिल ● जितेंद्र सिंह

- वार्षिक साहित्य अकादमी पुरस्कार 2024 से पुरस्कृत होंगी गगन गिल
- जागरण से विशेष बातचीत में बोलीं, आज बदहवास सी हूं पुरस्कार मिलने की घोषणा पर

**वर्तमान में जो समाज, देश के अंदर माहौल चल रहा है उसको आप किस तरह से देखती हैं?**

-देश व समाज के अंदर निश्चित तौर पर विद्वेष की भावना है। इसको लेकर जो मन में विक्षोभ था और है। इसके लिए एक कविता के माध्यम से लिखा है कि एक गऊ मेरे भीतर है, जिसे कटने का डर है। यह कविता बहुत कुछ कहती है जिसे मैं विस्तार से या इसका किसी रूप में वर्णन नहीं कर सकती। यह सांप्रदायिक विद्वेष है।

**इन दिनों क्या नया लिख रही हैं और पाठकों को कब तक पढ़ने को मिलने वाला है?**

- मैं कुछ कहने की स्थिति में नहीं हूं, अब कुछ संयत हो सकी हूं। फिर भी बताए देती हूं कि इन दिनों मैं गद्य की दो किताबों को लिखने का काम कर रही हूं। इसके साथ ही पांच कविता संग्रह और चार गद्य संग्रह भी हैं। यात्रा वृतांत जो वर्ष 2008 में प्रकाशित हुआ था अवाक नाम से जो कैलाश मानसरोवर की यात्रा पर आधारित था। इसको बीबीसी ने सर्वश्रेष्ठ यात्रा वृतांत के तौर पर चुना है।

**यह गद्य साहित्य किस तरह के हैं, क्या नए वर्ष में पाठकों तक पहुंच जाएंगे?**

- जिन गद्य पुस्तकों को लिखने का काम मैं कर रही हूं। इनमें साहित्यिक निबंध और व्यक्तिपरक निबंध शामिल हैं। पूरी कोशिश रहेगी कि नए वर्ष में यह काम पूर्ण कर सकूं।

**पुरस्कार मिलने की जानकारी कैसे हुई, कई बड़े नाम आपने पीछे छोड़ दिया। इस पर आप क्या कहेंगी?**

अब बस और कुछ न पूछिए, मैं जवाब नहीं दे पाऊंगी। मुझे तो आज दोपहर पौने दो बजे साहित्य अकादमी के सचिव डा. केएस राव ने फोन कर जानकारी दी कि आपको इस वर्ष का साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जा रहा है। इसके बाद तो मैं कुछ समझ नहीं पा रही। बड़े नामों को जानकर क्या करेंगे कि किनको पीछे छोड़ा, कुछ नाम तो हैं ही जिनको पीछे छोड़ा होगा।